Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh
1339

लोक व्यवहार

सन्तराम

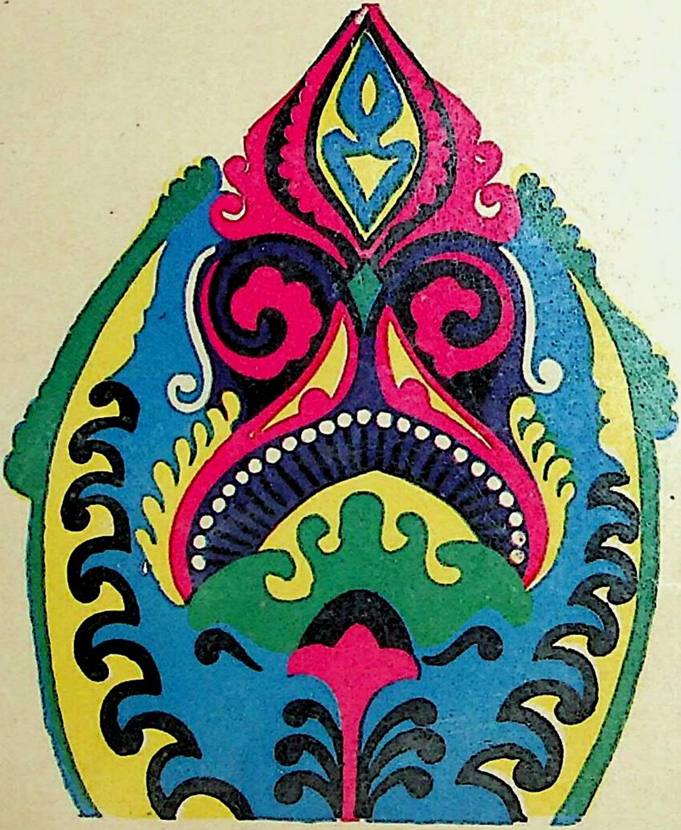

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

लोक-व्यवहार

सन्तराम वत्स्य

प्रकाशक

सुबोध पब्लिकेशन्स

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

प्रकाशक :

सुबोध पब्लिकेशन्स
२/४२४० ए, अंसारी रोड,
नई दिल्ली-११०००२

© सुबोध

संस्करण : मार्च १९८३

मुद्रक :

DEEPA OFFSET PRINTERS
SHAHDARA, DELHI-32.

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

कहाँ कौन

शिष्टाचार	५
घर में	१२
विद्यालय में	१७
खेल के मैदान में	२२
सड़क पर	२५
सवारी में	२६
व्यवहार-कुशलता	३५
समय की पाबन्दी	३७
धन्यवाद	३६
मित्रता	४०
मुस्कान	४१
वाणी	४२
व्यक्तित्व	४४
लोकप्रियता	४६
छोटी-छोटी बातें	५१
उतावला सो बावला	५३
जिज्ञासा	५५
दृढ़ निश्चय	५७
आज	५६
'नहीं' का महत्त्व	६०
आत्म-निरीक्षण	६२

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

शिष्टाचार

आत्महित चाहने वालों को पूर्णरूप से सभी अवसरों पर सावधानीपूर्वक शिष्टाचार का पालन करना चाहिए।

—महर्षि दत्तात्रेय

आप जंगल में नहीं रहते

आप जंगल में अकेले रहते होते या किसी ऐसे टापू में होते जिसमें कोई दूसरा मनुष्य न होता तो आपको लोक-व्यवहार सीखने-जानने की आवश्यकता न पड़ती। परन्तु, क्योंकि आप इस पुस्तक को पढ़ रहे हैं, इससे ही स्पष्ट है कि आप न तो जंगल में अकेले रहते हैं और न ही किसी निर्जन टापू में, क्योंकि ऐसी जगहों में पुस्तकें पहुँचाने की अभी तक कोई व्यवस्था नहीं हुई है।

शिष्टाचार को जानने और जानकर अपनाने की आवश्यकता समाज में रहने वाले सभी लोगों को होती है। शिष्ट व्यवहार करना इसलिए आवश्यक है कि आप स्वयं सुखी रहना चाहते हैं। जैसे आप सुखी रहना चाहते हैं, वैसे ही दूसरे भी सुखी रहना चाहते हैं। इसलिए दूसरों का जो व्यवहार आपको बुरा लगता है, आप भी दूसरों के साथ वैसा व्यवहार न करें। सामाजिक जीवन का यह

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

मूल मंत्र है। यह तो 'इस हाथ दे, उस हाथ ले' वाली बात है। 'जी' बोलोगे तो 'जी' सुनोगे। सारे व्यवहारों के बारे में यही नियम लागू होता है।

लोक-व्यवहार समाज-शास्त्र का अभिन्न अंग है। यह हमें सिखाता है कि परस्पर किस प्रकार का व्यवहार करना चाहिये। लोक-व्यवहार का सम्बन्ध हमारे आसपास की वस्तुओं, व्यक्तियों और हमसे है। हमें निश्चय करना है कि हमारे आसपास जो हैं, उनके सम्बन्ध में कैसा व्यवहार उचित है। हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि स्थान और समय के अनुसार भी लोक-व्यवहार में परिवर्तन करना पड़ता है। लोक-व्यवहार की रीति-नीति विभिन्न स्थानों में विभिन्न प्रकार की देखी जाती है। इसी प्रकार समय के अनुसार भी उसमें परिवर्तन होता रहता है। जो एक समय और स्थान में उचित और अच्छा है, वह दूसरे समय और स्थान में उचित और अच्छा नहीं भी हो सकता।

हमें यह भी निश्चय करना होगा कि हमारे लिए क्या अच्छा है, और यह निश्चय करते समय हम इस बात की उपेक्षा नहीं कर सकते कि हमारे व्यवहार की प्रतिक्रिया-स्वरूप दूसरे लोग हमसे जो व्यवहार करेंगे, वह कैसा होगा?

लोक-व्यवहार सापेक्षिक वस्तु है। इसका उद्देश्य है अपने चारों ओर के समाज के साथ सामंजस्यपूर्ण और मधुर सम्बन्ध स्थापित करना, समाज में अपने लिए उचित स्थान बनाना और दूसरों को उनका उचित स्थान देना।

कुटुम्ब के सब सदस्यों में सामंजस्यपूर्ण सम्बन्ध, फिर

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

कुटुम्बों-कुटुम्बों के बीच सामंजस्यपूर्ण सम्बन्ध और इसी प्रकार इस दायरे को बढ़ाकर समूचे समाज और राष्ट्र को और तब समूचे मानव-समाज को इस परिधि में समेट लेना।

सामंजस्य सुख का और संघर्ष दुःख का मूल है।

वह कहानी तो आपने सुनी होगी। गडरिये का एक लड़का था। बिना गाली के बात ही नहीं करता था। एक दिन बकरियाँ चराता वह ऐसी जगह पहुँचा जहाँ एकदम खड़ी ढलान थी। वह वहाँ मुरली बजाने लगा। मुरली की ध्वनि ढलान से टकराई और प्रतिध्वनि के रूप में वैसी ही मुरली की ध्वनि सुनाई दी। उसने सोचा कोई मेरी नकल करता हुआ मुरली बजा रहा है। उसे नकल करने वाले पर क्रोध आया। वह चिल्लाकर बोला, "यह कौन है जो मेरी नकल उतार रहा है ?"

ध्वनि की प्रतिध्वनि हुई, "यह कौन है जो मेरी नकल उतार रहा है ?"

गडरिये बालक का क्रोध और भड़का। वह बोला, "चुप होता है या नहीं ?"

फिर प्रतिध्वनि हुई, "चुप होता है या नहीं ?"

उसने गाली दी। प्रतिध्वनि में भी गाली सुनाई दी।

उसने गन्दी गालियों की बौछार शुरू कर दी।

प्रतिध्वनि में भी वैसी की वैसी गालियाँ सुनाई दीं।

जब वह गालियाँ बकते-बकते थक गया और वैसी ही गालियाँ सुनने को मिलीं तो जलता-कुढ़ता चुप हो गया।

घर आकर उसने दिन की घटना अपने पिता से बताई।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

वह उसे समझाते हुए बोले, "वहाँ दूसरा तुम्हें चिढ़ाने वाला कोई व्यक्ति नहीं छिपा हुआ था। वह तो तुम्हारी ध्वनि की प्रतिध्वनि थी।" पिता ने उसे समझाते हुए कहा, "जब तुम मुरली की मीठी तान निकाल रहे थे तो तुम्हें उसकी मीठी प्रति-ध्वनि सुनाई दी और जब तुमने गालियाँ बकीं तो गालियाँ सुनाई दीं। जैसा बोलोगे, वैसा सुनोगे।"

तब से उस लड़के ने गालियाँ बकना छोड़ दिया।

आप सभ्य समाज में रहते हैं और चाहते हैं कि लोग आपको जंगली न कहकर सभ्य कहें-समझें और चाहते हैं कि आप सुखी एवं प्रसन्न रहें तो आपको शिष्टाचार का पालन करना होगा। यह आपके लिए हितकारी और कल्याणकारी है। आप जहाँ कहीं भी जायेंगे, शिष्टाचार के पालन से लोग आपका आदर-सत्कार करेंगे।

शिष्टाचार क्या है ?

शिष्टाचार शिष्ट—भले-लोगों का आचरण है। आचरण करना अर्थात् अमल में लाना। केवल जान लेने या पढ़ लेने से बात नहीं बनती। यह जानकर करने की चीज है।

शिष्टाचार छोटे-बड़े सभी के पालन की चीज है। हाँ, छोटी अवस्था में यदि इसे अपना लिया जाय तो फिर जीवन-भर सुगमता से इसे निभाया जा सकता है। इससे व्यक्ति-व्यक्ति के बीच और व्यक्ति और समाज के बीच व्यवहार में सुविधा होती है, सद्भाव और सहयोग की भावना बढ़ती है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

शिष्टाचार और चापलूसी

शिष्टाचार और चापलूसी दो भिन्न-भिन्न बातें हैं। किसी की झूठी प्रशंसा करके यदि उससे अपना कोई स्वार्थ सिद्ध किया जाय तो यह चापलूसी कहलाएगी। इसको मक्खन लगाना भी कहते हैं। चापलूस व्यक्ति अपने आत्म-सम्मान का ध्यान न रखते हुए दूसरे की अतिशयोक्तिपूर्ण प्रशंसा करता है और समझता है कि इस व्यक्ति को प्रसन्न करके मैं अपना काम निकाल लूँगा। पर यदि जिस आदमी की चापलूसी की जा रही हो, वह निरा मूर्ख न हो तो झट भाँप जाता है कि यह आदमी मेरी चापलूसी कर रहा है और चापलूसी करने वाले से घृणा करने लगता है।

लोग प्रायः नेताओं की, मालिकों की, अपने बड़े अधिकारियों की और धनवानों की चापलूसी करते देखे जाते हैं, अर्थात् जिस किसी से भी अपना काम निकालना हो उसकी चापलूसी करते हैं। यह तुच्छ लोगों का ही काम है। आत्म-गौरव और आत्म-सम्मान वाले लोग चापलूसी से और चापलूसों से घृणा करते हैं।

चापलूसी करने वाला उस आदमी को मूर्ख समझता है जिसकी वह चापलूसी कर रहा होता है, क्योंकि कोई मूर्ख आदमी ही अपनी झूठी प्रशंसा सुनकर प्रसन्न हो सकता है।

किसी की उचित प्रशंसा करना अथवा सेवा करना, नम्रता और सज्जनता का व्यवहार करना चापलूसी नहीं है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

हाँ, अति तो कहीं भी नहीं करनी चाहिए। शिष्टाचार में भी नहीं। अति शिष्टाचार में भी दिखावे का भाव रहता है और दूसरों को अखरता है।

शिष्टाचार से मनुष्य की शिक्षा, सभ्यता और रुचि का पता चलता है। शिष्टाचारी व्यक्ति अपने व्यवहार से दूसरों के आदर और सम्मान का पात्र बनता है। वह अपने कुल, जाति और प्रदेश का गौरव बढ़ाता है।

शिष्टाचार का प्रभाव बड़ा संक्रामक होता है। शिष्ट व्यक्ति के साथ अशिष्ट व्यक्ति भी अशिष्ट व्यवहार करने में झिझकता है।

बहुत-से झगड़ों का कारण लोगों के छोटे-छोटे अशिष्ट व्यवहार होते हैं। शिष्टाचार से बहुत-से छोटे-मोटे झगड़े शान्त हो जाते हैं।

शिष्टाचार में देश-भेद के कारण पर्याप्त भिन्नता देखने में आती है। विभिन्न देशों में शिष्टाचार की रीति-नीति बदलती रहती है। समय के अनुसार एक ही देश के शिष्टाचार में छोटे-मोटे परिवर्तन होते रहते हैं।

शिष्टाचार की बहुत-सी बातें सभी बचपन में अपने माता-पिता या बड़ों की देखादेखी सीख जाते हैं। किन्तु कई बालक अपने बिगड़े साथियों की देखादेखी या दूसरों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिए प्रायः अशिष्ट व्यवहार करते देखे जाते हैं।

यह अशिष्टता की प्रवृत्ति बढ़ते-बढ़ते उद्दण्डता और उच्छृङ्खलता का रूप धारण कर लेती है।

बड़ों की हर बात में बोलना, दूसरों की हर बात

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

काटना, व्यर्थ की बहस करना, अच्छी-अच्छी परम्पराओं का विरोध करना, बड़ों की निन्दा करना, दूसरों को कुछ नहीं समझना और अपने-आपको सब-कुछ समझना, तू-तबड़ की भाषा बोलना, बड़ों की हँसी उड़ाना—इत्यादि अनेक बातें अशिष्ट आचरण मानी जाती हैं।

शिष्टाचार को मुख्य रूप से तीन भागों में बाँटा जा सकता है : १. बोल-चाल सम्बन्धी शिष्टाचार, २. चेष्टा सम्बन्धी शिष्टाचार और ३. कार्य सम्बन्धी शिष्टाचार।

शिष्टाचार की आवश्यकता जीवन के सभी क्षेत्रों में, जहाँ कहीं भी एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के सम्पर्क में आता है, पड़ती है—घर में भी और विद्यालय में भी, बाजार में भी और सड़क पर भी, सभा में भी और खेल के मैदान में भी, कार्यालय में भी और कारखाने में भी।

इसलिए शिष्टाचार को अपना स्वभाव बना लेना चाहिए। आप देखेंगे कि शिष्टाचार के नियमों का पालन करने से सभी जगह आपका उचित आदर होगा। दूसरे भी आपके साथ शिष्ट व्यवहार करेंगे और आपकी छोटी-मोटी अनेक कठिनाइयाँ दूर हो जाएँगी।

शिष्ट बात और व्यवहार में आपका कुछ भी तो खर्च नहीं होता। शिष्ट व्यक्ति का सभी आदर और सम्मान करते हैं। उसकी सुख-सुविधा का ध्यान रखते हैं और इस प्रकार शिष्टाचार अपने लिए और दूसरे के लिए लाभकारी सिद्ध होता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

घर में

घर-परिवार वह पाठशाला है, जहाँ हम पहले-पहल शिक्षा लेते हैं और सबसे अधिक शिक्षा लेते हैं।

घर को स्वच्छ रखना, घर के काम में सहयोग देना, सबसे यथायोग्य व्यवहार करना, अनुशासन में रहना हम घर में सीखते हैं।

□ □ □

□ अपने से बड़ों—दादा-दादी, माता-पिता, चाचा-चाची, बहन-भाई—का हमें सदा आदर करना चाहिए।

□ बड़ों को 'आप' कहकर पुकारिये, 'तुम' नहीं।

□ बराबर वालों या छोटों को 'तुम' कह सकते हो।

□ अपने लिए 'मैं' का प्रयोग करना चाहिए, 'हम' का नहीं।

□ प्रातःकाल उठकर बड़ों को हाथ जोड़कर प्रणाम करना चाहिये।

□ प्रणाम बहुत दूर से चिल्लाकर नहीं करना चाहिए।

□ घर में कोई आए तो उसे प्रणाम कीजिए। आदर से बिठाइए। चाय-पानी के लिए पूछिए।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

□बड़े घर पर न हों और मेहमान को आप पहचानते न हों तो उनका नाम-धाम पूछिये। काम पूछिये। वे जो कुछ बताएँ, उसे चाहें तो लिख लीजिए और जब बड़े आएँ तो उन्हें बता दीजिए।

□मेहमान जाने लगें तो उन्हें 'प्रणाम' कीजिए।

□'आपका क्या नाम है' यह न कहकर यह कहिए, 'कृपया अपना शुभ नाम बता दीजिए।'

□माता-पिता जो आज्ञा दें उसका पालन कीजिए। आज्ञा का पालन करने में कुछ कठिनाई हो तो नम्रतापूर्वक बता दीजिए।

□अपने से बड़े पुकारें, तो 'आया जी', 'जी हाँ', 'आज्ञा' आदि आदर-सूचक उत्तर देना चाहिए।

□आप अपने से बड़ों को सम्बोधित करते समय उनके साथ अपना सम्बन्ध-सूचक शब्द तथा अन्त में 'जी' जोड़ना चाहिए, जैसे : माताजी, पिताजी, भाईजी, बहनजी आदि।

□किसी को नाम लेकर पुकारें तो नाम के साथ अन्त में 'जी' अवश्य लगाएँ। सुधीरजी, प्रकाशजी आदि।

□सम्बन्ध-सूचक शब्द के अन्त में या नाम के अन्त में 'जी' अवश्य जोड़ना चाहिए। इसमें कुछ भी खर्च नहीं होगा। सम्मान-सूचक शब्दों के प्रयोग में जरा भी कंजूसी नहीं करनी चाहिए।

□आप चारपाई पर बैठे हों और कोई बड़ा उस पर बैठने लगे तो उसे सिरहाने की ओर बिठाइए और स्वयं पैताने की ओर सरक जाइए।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

 Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

□ बड़ों की ओर पैर पसारकर मत बैठिए।

□ बड़ों की ओर पीठ करके मत बैठिए।

□ बड़ों की ओर पैर करके मत सोइए।

□ आप बैठे हों और आपसे बड़ा कोई खड़ा होकर आपसे बात कर रहा हो तो बैठे-बैठे बातें मत कीजिए। उठ खड़े होइए।

□ अपने से छोटों से स्नेह कीजिए। उन्हें डराते-धमकाते ही न रहें।

□ फल-मिठाई आदि पहले छोटों को दीजिए, फिर स्वयं खाइए।

□ अपने से छोटों से कोई भूल हो जाए तो उन्हें प्रेम से उनकी भूल बताइए। एकदम डाँट-डपट मत शुरू कर दीजिए।

□ बड़ों से चिल्लाकर या तुनककर बात मत कीजिए।

□ घर में आपके करने योग्य कोई काम पड़ा हो तो उसे अपने-आप कर दीजिए। किसी की आज्ञा मिलने की प्रतीक्षा मत कीजिए।

□ एक बार कहने पर ही काम कर डालिए। बार-बार मत कहलवाइए।

□ घर में मेहमान आए हों या दूसरे लोग बैठकर बातचीत कर रहे हों तो साथ वाले कमरे में या आँगन में गुल-गपाड़ा मत मचाइए।

□ घर में मुँह लटकाकर या रोनी सूरत बनाकर मत रहिये।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

□स्वयं प्रसन्न रहिए और दूसरों को भी प्रसन्न रखिए।

□घर के बड़े लोग कभी झिड़क दें तो :

(क) वह काम दोबारा न कीजिए, जिसके लिए झिड़का गया है।

(ख) इसे अपने अपमान का प्रश्न मत बनाइए। बड़ों की ताड़ना का उद्देश्य आपको अपमानित करना नहीं, आपको योग्य बनाना है।

□चारपाई, कुर्सी या मेज को घसीटकर मत हटाइए।

□दरवाजों या खिड़कियों को धीरे से खोलिए या बन्द कीजिए।

□बर्तनों को रखते या उठाते समय आपस में टकराइये मत।

□अपने कपड़े, पुस्तकें या जूते यथास्थान रखिए।

□कूड़ा-कचरा कूड़ेदान में डालिए।

□जहाँ-तहाँ मत थूकिये।

□सूर्योदय से पूर्व अवश्य उठ जाइए।

□प्रतिदिन दातुन और स्नान कीजिए, स्वच्छ वस्त्र पहनिये।

□नाखूनों को बढ़ने मत दीजिए।

□नाखूनों को दाँतों से मत काटिये।

□खाते समय सुड़प-सुड़प की आवाज मत कीजिए।

□खाने से पहले हाथ धो लीजिए और खाने के बाद अच्छी तरह कुल्ला करके मुँह-हाथ साफ कीजिए।

□कुल्ले के पानी को निगलिए मत।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

□हाथ पोंछने के लिए तौलिए या रूमाल का प्रयोग कीजिए।

□गन्दे जूतों समेत कमरे में मत घुसिये। पाँवपोश पर जूते झाड़ लीजिए।

□रूमाल, बनियान, कच्छा और जुराबें—इनकी सफाई का विशेष ध्यान रखें।

□अपना काम अपने-आप करने का स्वभाव बनाइए।

□अपनी भूल को तुरन्त स्वीकार कर लीजिए। भूल के लिए क्षमा माँगिए। किन्तु बार-बार भूल करना और बार-बार क्षमा माँगना अच्छी बात नहीं है।

□अपना रहन-सहन सादा रखिए। पहनावे में तड़क-भड़क को स्थान मत दीजिए।

□कपड़े ठीक सिले हुए और धुले हुए होने चाहिएँ। बहुत चुस्त कपड़े स्वास्थ्य की दृष्टि से हानिकारक हैं।

□तीखे और चमकीले-भड़कीले रंगों वाले कपड़े पहन-कर जोकर मत बनिये।

□कपड़ों के रंगों और काट से पहनने वाले की रुचि और संस्कृति का परिचय मिलता है।

□अस्त-व्यस्त, कानों और माथे पर चढ़े हुए झबरे सिर के बाल किसी सुरुचिपूर्ण, अनुशासित व्यक्तित्व का परिचय नहीं देते।

□पहनावे में पश्चिम की नकल करने की अपेक्षा अपने देश के जलवायु का ध्यान रखना अधिक आवश्यक है। 'खाओ मन-भाता, पहनो जग-भाता।'

□अन्न या खाने-पीने की चीजों को पैर मत लगाइए।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

विद्यालय में

जो नम्र और जिज्ञासु हैं, उनके लिए सभी स्थान विद्यालय हैं क्योंकि वे जीवन-भर कुछ न कुछ सीखते रहते हैं, अपने ज्ञान को बढ़ाते रहते हैं, किन्तु शिक्षा और शिक्षालय का भी जीवन-निर्माण में महत्त्वपूर्ण स्थान है।

छात्र-जीवन सारे जीवन की नींव होती है। यह नींव जितनी ही सुदृढ़ होगी, जीवन उतना ही सुखी होगा।

विद्यालय में शिक्षक का स्थान महत्त्वपूर्ण है। कुम्हार घड़ा बनाते समय जैसे भीतर की ओर हाथ का सहारा दिए रहता है और बाहर की ओर थपकनी से थपक-थपक कर घड़े को मनचाहा आकार प्रदान करता है, वैसे ही शिक्षक भी छात्र का निर्माण करने के लिए ही उसे कभी-कभी ताड़ता है। पर इस ताड़न में भी उद्देश्य छात्र को सुधारना ही होता है।

छात्रों को शिक्षकों का पूरी तरह सम्मान करना चाहिए और अनुशासन का पालन करते हुए उनकी आज्ञा का पालन करना चाहिए। नियमित रूप से विद्यालय का काम करना चाहिए।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

 Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

☐ विद्यालय में पहुँचते और विद्यालय से आते समय अध्यापक का अभिवादन करना चाहिए।

☐ विद्यालय की प्रार्थना में भाग लेते समय निश्चल, चुपचाप रहना चाहिए।

☐ कक्षा में जाते समय बरामदे या गलियारे में शोर नहीं मचाना चाहिए और धक्का-मुक्की न करते हुए प्रवेश करना चाहिए।

☐ कक्षा में शान्त भाव से बैठकर अध्यापक जो कुछ पढ़ा रहे हों, उसे ध्यानपूर्वक सुनना चाहिए।

☐ यदि कोई बात समझ में न आए या कुछ पूछना हो तो अपने स्थान पर खड़े होकर नम्रतापूर्वक पूछना चाहिए।

☐ कक्षा में बैठकर मूँगफली, गण्डेरी या दूसरी चीजें नहीं खानी चाहिएँ।

☐ विद्यालय की दीवारों पर कभी कुछ नहीं लिखना चाहिए।

☐ विद्यालय को स्वच्छ रखना छात्रों का कर्त्तव्य है।

☐ कक्षा में बैठकर आपस में बातें करना अनुचित है।

☐ विद्यालय की क्यारियों से फूल-पत्तियाँ तोड़ना, क्यारियों में चलना उचित नहीं है।

☐ विद्यालय के शौचालय और मूत्रालय की सफाई का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

☐ नल को व्यर्थ नहीं बहने देना चाहिए।

☐ छुट्टी के समय, कक्षा छोड़ते समय यदि पंखा चल

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

रहा है और बत्तियाँ जल रही हैं तो उन्हें बन्द कर देना चाहिए।

□ कागज के टुकड़े, पेंसिल के छिलके इधर-उधर फेंककर विद्यालय को गन्दा नहीं करना चाहिए।

□ विद्यालय में किसी की कोई चीज इधर-उधर पड़ी हुई मिल मिल जाय तो उसे अपने पास न रखकर अध्यापक महोदय के पास पहुँचा देनी चाहिए।

□ किसी साथी की कलम, पेंसिल या पुस्तक उससे पूछे बिना नहीं लेनी चाहिए।

□ विद्यालय के पुस्तकालय से ली हुई पुस्तकें यथा-समय लौटा देनी चाहिएँ।

□ पुस्तकालय से ली हुई पुस्तकों पर अपना नाम या और कुछ नहीं लिखना चाहिए।

□ उनके चित्रों और मानचित्रों को फाड़ना बहुत अनुचित कार्य है।

□ इन पुस्तकों को बिना गन्दा किए या फाड़े ज्यों का त्यों लौटा देना चाहिए।

□ विद्यालय में धुला हुआ गणवेश पहनकर, नहा-धोकर, सिर में तेल डालकर और कंघी करके जाना चाहिए।

□ जूते साफ, और नाखून कटे होने चाहिएं। जेब में रूमाल रखना भी न भूलें।

□ विद्यालय जाते समय, घर से बस्ते में सभी आवश्यक पुस्तकें, कापियाँ और दूसरी चीजें रख लेनी चाहिएँ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

□ विद्यालय छोड़ते समय अपनी सारी चीजों को ठीक से सम्भाल लेना चाहिए।

□ कक्षा में जाते समय या बाहर आते समय या जब अध्यापक कक्षा में न हों, शोर नहीं करना चाहिए।

□ खेलों, छात्र-सभा और विद्यालय के अन्य कार्यक्रमों में पूरा-पूरा भाग लेना चाहिए।

□ प्रधानाचार्य के कमरे में बिना पूछे नहीं घुसना चाहिए।

□ छात्रों को फैशन से सदा बचना चाहिए। 'सादा जीवन उच्च विचार' ही उनके जीवन का आदर्श होना चाहिए।

□ विद्यालय में आधी छुट्टी के समय भोजन करने से पूर्व हाथ अच्छी तरह धो लेने चाहिएँ और भोजन के बाद कुल्ला कर लेना चाहिये।

□ जूठे पत्ते, दोने, फलों के छिलके या कागज इधर-उधर न फेंककर कूड़ेदान में ही फेंकने चाहिएँ।

□ कक्षा से उठकर इधर-उधर घूमना भले छात्रों को शोभा नहीं देता।

□ दूसरों की नकल भूलकर भी नहीं करनी चाहिए। अपने परिश्रम से ही आगे बढ़ना चाहिए।

□ स्वयं नकल करना जितना बुरा है, दूसरों को कराना भी उतना ही बुरा है।

□ आपस में मार-पीट या गाली-गलोच जंगलीपन है। असभ्यता-सूचक कार्यों से दूर ही रहना चाहिए।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

 Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

□ सिगरेट पीना अत्यन्त हानिकारक व्यसन है। इससे सदा बचना चाहिए।

□ विद्यालय की किसी भी वस्तु का उपयोग करते समय यह मत सोचिए, यह टूट-फूट जाएगी तो मेरा क्या जाएगा। विद्यालय आप सबका सांझा है।

□ सदा यह भावना रखिये कि विद्यालय की हानि आपकी ही हानि है।

□ सदा यह भावना रखिये कि विद्यालय आपका दूसरा बड़ा घर ही है। विद्यालय के साथी आपके भाई हैं। विद्यालय की हानि आपकी और राष्ट्र की हानि है।

[...]

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

खेल के मैदान में

खेल के मैदान में केवल दो टोलियों की हार-जीत का निर्णय ही नहीं होता; और भी बहुत-कुछ होता है।

खेल के मैदान में खिलाड़ियों के चरित्र की परीक्षा होती है।

खेल के ही मैदान में पता लगता है इस देश के लोग कितने अनुशासन-प्रिय हैं।

खेल के मैदान में ही पता लगता है कि उनमें कैसा मेल-मिलाप है।

खेल में हार-जीत तो होगी ही। जो आज जीत गया, वह कल हार भी सकता है। जो आज हार गया वह कल जीत भी सकता है। इसलिये हारे हुए को गुस्सा नहीं करना चाहिए। सच्चा खिलाड़ी हारकर भी प्रसन्न रहता है। यही तो 'खिलाड़ी भावना' है। जिस खिलाड़ी में खिलाड़ी-भावना नहीं, वह सच्चा खिलाड़ी नहीं।

एक राजनेता का कहना है कि युद्ध युद्ध के मैदान में नहीं, खेल के मैदान में लड़ा जाता है, अर्थात् जिस देश के नागरिक खेल के मैदान में अनुशासन, मिल-जुलकर काम करना, प्रतिपक्ष की चाल को समझना और फुर्ती से उसका

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

प्रतिकार करना जानते हैं, वे ही युद्ध-क्षेत्र में भी विजयी होते हैं।

□□□

□खेल में नियमों का पूरी तरह पालन करना चाहिए।

□निर्णायक के निर्णय का सम्मान कीजिए।

□विपक्षी खिलाड़ी को अनुचित ढंग से परास्त करने का प्रयत्न कभी मत कीजिए।

□खेल में भी कभी झूठ मत बोलिए।

□खेल में हार-जीत होती ही रहती है। जीत पर फूलिये मत और हार पर बिसूरिये मत। दोनों स्थितियों में सामान्य रूप से प्रसन्न रहिये।

□आप खेल देखने वालों में बैठे हों तो खिलाड़ियों को प्रोत्साहन देते समय अशोभन ढंग मत अपनाइए।

□दर्शकों को चाहिए कि न तो स्वयं हुल्लड़बाजी करें और न हुल्लड़बाजी करने वालों का समर्थन करें।

□इस ढंग से खेल देखने बैठिए कि आपके आस-पास, आगे-पीछे बैठे दर्शकों को आपके कारण असुविधा न हो।

□यदि आप खेल में विजयी हुए हैं तो पराजित पक्ष से नम्रता का व्यवहार कीजिए। यदि आप पराजित हैं तो विजेता पक्ष को अपना शत्रु मत समझिये।

□यदि आपको कोई पुरस्कार प्रदान किया जाता है तो देने वाले व्यक्ति को, पुरस्कार ग्रहण करने के बाद प्रणाम कीजिए।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

□ यदि आपकी विजय पर बड़े लोग बधाई दें तो उन्हें विनय के साथ प्रणाम कीजिए।

□ जहाँ कहीं भी खेल-तमाशे में आप जायँ, व्यवस्था बनाए रखने में अपना सहयोग दें।

□ खेल समाप्त होने पर सभी लोग एकदम बाहर निकलने लगते हैं, जिसके कारण धक्कामुक्की होने लगती है। आप समझदार हैं, थोड़ा रुक जाइए। भीड़ को छँट जाने दीजिए। तब आप सुविधा से बाहर जा सकेंगे।

□ एडवांस टिकट ले लिया जाय तो बड़ी सुविधा रहती है। निराशा और भीड़ से बचा जा सकता है। ब्लैक में कभी टिकट मत खरीदिए। इससे भ्रष्टाचार बढ़ता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

सड़क पर

सड़क एक सार्वजनिक स्थान है। सबकी सुविधा और सुरक्षा के लिए सड़क पर सवारियों और पैदल चलने वालों के लिए नियम निर्धारित हैं। इन नियमों का उद्देश्य आपकी स्वतन्त्रता को सीमित करना नहीं, अपितु सबकी स्वतंत्रता और सुरक्षा को सुनिश्चित करना है। हमारे अधिकारों की सीमा वहाँ समाप्त हो जाती है, जहाँ दूसरे की अधिकार-सीमा आ जाती है।

सड़क के नियम इस मूल तथ्य पर आधारित हैं कि आप अपने गन्तव्य स्थान पर चाहे दो मिनट देर से पहुँचें परन्तु सुरक्षित—बिना दुर्घटनाग्रस्त हुए—पहुँच सकें। और सच तो यह है कि यदि सड़क के नियमों का पालन न किया जाय तो कोई कहीं भी न तो समय पर पहुँच सके और न सुरक्षित ही।

□ जहाँ कहीं पैदल चलने वालों के लिए पटरी हो उसी पर चलिए।

□ जहाँ पटरी न हो वहाँ सड़क के एकदम किनारे पर चलिए।

□ सदा अपनी बाईं ओर चलिए।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

□सड़क पार करते समय विशेष रूप से सावधान रहिए।

□बड़े नगरों में जहाँ सड़क पार करने के लिए स्थान सुनिश्चित होता है, वहीं से पार कीजिए। वहाँ 'पैदल पार-पथ' लिखा रहता है।

□जहाँ चलने वालों की भीड़ हो, वहाँ मित्रों के साथ खड़े होकर गप्पें मारना अनुचित है।

□भीड़ की जगह मित्रों के साथ जा रहे हों तो आगे-पीछे होकर चलिए। बराबर-बराबर इस तरह नहीं कि सामने से आने वालों को कठिनाई हो।

□चौराहे पर, नुक्कड़ पर, पान वाले की दुकान के पास, स्कूल के बाहर, सिनेमा के पास टोली बनाकर खड़े होना, आते-जाते लोगों पर छींटे कसना असभ्यता है।

□सड़क पर चलते समय यदि आप अपने मित्रों से बातचीत कर रहे हैं तो इतने जोर से तो मत बोलिए कि जैसे राह-चलतों को सुना रहे हों।

□साथी के गले में बाहें डालकर मत चलिए।

□सीटी बजाते या गाना गाते चलना अशिष्टता है।

□सड़क पर फलों के छिलके मत फेंकिए। इससे पैर फिसल सकता है और पैर न फिसले तो भी सड़क तो गन्दी होती ही है। सुरुचि का विकास कीजिए, गन्दगी से घृणा कीजिए। स्वच्छता और सुन्दरता सगी बहनें हैं।

□सड़क पर कोई छिलका, रोड़ा या काँटेदार टहनी पड़ी हो तो हटाकर एक ओर कर दीजिए।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

□ सड़क पर गन्ने के छिलके, जूठे दोने-पत्तं . कागज, पान की थूक तथा कूड़ा-करकट मत फैलाइये।

□ आप भले नागरिक हैं। सार्वजनिक स्थानों को स्वच्छ रखना आपका कर्त्तव्य है।

□ सड़क पर चलते समय बोझा उठकर चलने वालों के लिए मार्ग छोड़ दीजिए।

□ सड़क पर चलते-चलते कुछ खाते रहना अशिष्टता है।

□ राह चलते समाचारपत्र या पुस्तक को पढ़ने का प्रयत्न मत कीजिए। इससे दुर्घटना हो सकती है।

□ यदि कोई अपरिचित व्यक्ति आपसे कोई पता पूछे और आप जानते हों तो अच्छी तरह समझा दीजिए।

□ साइकिल चलाते हों तो उसके ब्रेक, घंटी, बत्ती सब-कुछ सही रखिए। यदि किसी मार्ग पर एक ओर से सवारियों का जाना मना हो तो वहाँ सवारी मत ले जाइए।

□ कई मार्गों के प्रारम्भ में लिखा होता है कि 'यह मार्ग सर्वसाधारण के लिए नहीं है', इन मार्गों से मत जाइए।

□ दीवार या काँटेदार तार फाँदकर किसी स्थान में प्रवेश मत कीजिए।

□ देव-स्थानों में जूते पहनकर मत जाइए। जूतों को हाथ लगाने पर हाथ धो लीजिए।

□ राह चलते किसी की वस्तु गिर पड़े तो उठा दीजिए। कोई आपकी गिरी वस्तु उठा दे तो उसका धन्य-वाद कीजिए।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

□किसी पार्क या फुलवाड़ी में टहलते समय फूल-पत्तियाँ मत तोड़िए।

□चार साथी मिलकर कहीं जा रहे हैं। वे समझ रहे हैं कि हम चार जने हैं, इक्का-दुक्का कोई हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता; किसी का मजाक उड़ाते हैं, किसी को धक्का देते हैं, पंक्ति में आगे जाकर खड़े हो जाते हैं, कोई रोकता है तो लड़ने को तैयार हो जाते हैं—यह बुरी बात है।

□कुछ लोग जब अपने हिमायतियों के साथ होते हैं तो उद्दण्ड और उच्छृङ्खल हो जाते हैं, अपने-आप को 'दादा' समझने लगते हैं—यह छिछोरापन है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

सवारी में

बस, रेलगाड़ी या अन्य किसी सवारी में चढ़ने से पहले, उतरने वालों को उतरने दीजिए। उतरने वाले जल्दी उतरना चाहते हैं। इससे धक्का-मुक्की होने लगती है। जो शक्तिशाली हैं, वे दूसरों को पीछे धकेलकर पहले चढ़ जाते हैं। स्त्रियाँ, बच्चे और वृद्ध तथा वे लोग जो धक्का-मुक्की को असभ्यता मानते हैं, पीछे रह जाते हैं। यदि चढ़ने वाले पंक्ति बनाकर खड़े हों और उतरने वालों को पहले उतरने दें तो कम समय, बिना धक्का-मुक्की के लोग चढ़ सकते हैं।

प्रायः देखा जाता है कि स्थानीय बसों मे, खड़े-खड़े यात्रा करने वाले बस में चढ़कर दरवाजे के पास ही खड़े हो जाते हैं; आगे के खाली स्थान की ओर नहीं बढ़ते। इससे दरवाजे पर भीड़ हो जाने के कारण शेष लोग चढ़ नहीं पाते हैं। कण्डक्टर के बार-बार कहने पर भी लोग आगे नहीं बढ़ते। अगर वे तुरन्त आगे बढ़ जायँ तो बस में और लोग भी चढ़ सकते हैं।

विचित्र बात तो यह है कि जब दरवाजे पर भीड़ के कारण हम नीचे होते हैं तो लोगों को बस में आगे न बढ़ने

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

 Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

के लिए कोसते हैं; किन्तु जब हम बस में होते हैं तो लोगों की कठिनाई को भूल जाते हैं और दरवाजे में खड़े रहते हैं।

रेलगाड़ी में लोग प्रायः दरवाजा बन्द कर देते हैं; किसी को भीतर घुसने नहीं देते। कुछ लोग खिड़कियों में से भीतर घुस आते हैं। कुछ लोगों के बहुत मिन्नत-खुशामद करने पर दरवाजा खोल दिया जाता है। अब यही भाई जब भीतर पहुँच जाता है तो बाहर वालों को भीतर आने से रोकता है। पाँच मिनट पहले की अपनी स्थिति को भूल जाता है।

सभ्यता-शिष्टाचार की, संस्कृति और धार्मिक जीवन की कुंजी यह है कि जो बात, जो काम जैसे आपको बुरा लगता है, वैसे ही दूसरों को भी बुरा लगता है। इसलिए जिस व्यवहार को आप अपने लिए बुरा समझते हैं, दूसरों के साथ भी वैसा व्यवहार मत कीजिए।

□ बस या रेल में यात्रा करते समय, उनके भीतर गन्दगी मत फैलाइए।

□ बस या रेल में बैठकर ज़ोर-ज़ोर से बातें करना छिछोरापन है। आप जिससे बात कर रहे हैं, उसे सुनाइए, सारी गाड़ी के यात्रियों को क्यों सुनाते हैं?

□ यदि आप बैठे हों और आपके परिचित कोई बड़े खड़े हों तो स्वयं खड़े हो जाइए और उन्हें बैठने दीजिए।

□ कोई वृद्ध, रोगी, बच्चे वाली स्त्री या अशक्त व्यक्ति खड़ा हो और आप बैठे हों तो अपना स्थान उनके लिए छोड़ दीजिए।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

 Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

□बस या रेल में बैठे हुए बाहर कोई चीज़ फेंकते समय या थूकते समय इस बात का ध्यान रखें कि किसी आते-जाते पर न पड़े।

□कुछ लोग बस या रेल में यात्रा करते समय पैदल चलने वालों पर कोई चीज़ फेंकने, कोई अपशब्द कहने या कोई भद्दा मज़ाक करने की धृष्टता करते हैं। वे जानते हैं कि भागती बस में ये लोग हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकते। यह असभ्यता है।

□साथी यात्रियों के साथ नम्र व्यवहार कीजिए। उनकी सुविधा का ध्यान रखिए। सामान रखने या उतारने में एक-दूसरे की सहायता कीजिए।

□बिना टिकट कभी यात्रा मत कीजिए।

□सामान उठवाने से पहले मजदूर से मजदूरी तय कर लीजिए। बाद में झगड़ा करना अनुचित है।

□रेल में, रात की यात्रा में प्रायः बैठे-बैठे नींद आने लगती है। कुछ लोग नींद में ऊँघते हुए दूसरों पर गिरने-पड़ने लगते हैं। यह असभ्यता है। कुछ लोग टाँगें पसारकर दूसरे पर रख देते हैं। कुछ लोग दूसरों को बैठने के लिए भी स्थान नहीं देते और स्वयं पसरकर सो जाते हैं। ऐसे स्वार्थान्ध लोगों को कोई भी अच्छी दृष्टि से नहीं देखता।

□कुछ लोग जो चार-छः जने मिलकर यात्रा कर रहे होते हैं, उद्दण्डता का व्यवहार करने लगते हैं। वे समझते हैं कि हमारा यहाँ गुट है, इसलिए हमारा कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। ऐसे लोगों का शेष यात्रियों को संगठित

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

होकर विरोध करना चाहिए।

□ बड़े शहरों की स्थानीय बसों में कुछ छात्र असभ्य आचरण करते देखे जाते हैं। वे बिना मतलब बार-बार घंटी बजाएंगे। टिकट लेने के लिए कहने पर 'क' कहेगा कि 'ख' लेगा और 'ख' 'ग' को बताएगा। पायदान पर खड़े होकर यात्रा करेंगे, इत्यादि। यह छिछोरापन दिखाने वाले छात्र जान-बूझकर या अनजाने में समस्त छात्र-समाज के प्रति लोगों के मन में बुरी धारणा बनाने में सहायक हैं।

□ ऐसे कुत्सित कार्य करने वाले छात्र अपने मन में यह समझते रहते हैं कि हम बड़े बहादुर हैं। वे बिगड़े बच्चों की तरह लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिए तरह-तरह के ऊलजलूल काम करते देखे जाते हैं। काश कि वे इस बात को समझ पाते कि जिसे वे अपना बड़प्पन समझ रहे हैं, वह वास्तव में उनका असभ्याचरण है। चार-छः छात्र मिलकर यदि एक बस-कण्डक्टर को परेशान कर लेते हैं तो इसमें गौरव अनुभव करने की क्या बात है? यदि कुछ पैसों का टिकट न खरीदकर कोई चोर की तरह चलती बस से उतर जाता है तो इसमें क्या बहादुरी है?

□ किसी के साथ अन्याय हो रहा हो, कोई निर्दोष दुर्बल व्यक्ति किसी द्वारा सताया जा रहा हो, कोई लड़की या महिला किसी द्वारा सताई जा रही हो, वहाँ न्याय का पक्ष लेने वाला, निर्दोष का पक्ष लेने वाला, सताने वालों का सामना करने वाला व्यक्ति बहादुर और समाज द्वारा सम्मान पाने का अधिकारी हो सकता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

□ जब कभी आप रिक्शा, ताँगा या ऐसी अन्य कोई सवारी लें जिसमें किराया दिखाने वाला मीटर न लगा हो तो पहले ही किराया तय कर लें। बाद में, गन्तव्य स्थान पर पहुँच जाने पर झगड़ा न करें।

□ कई बार ऐसा देखा गया है कि सवारी चलाने वाले एक-दूसरे से आगे बढ़ने की होड़ लगाने लगते हैं। यह बड़ा खतरनाक खेल है। आप स्वयं तो ऐसा करें ही न, जिस सवारी पर आप बैठे हों, उसका चालक ऐसा करे तो उसका भी विरोध करें।

□ सरकारी बस हो या प्राइवेट, पैसे देने के बाद टिकट अवश्य लीजिए। ऐसा करके आप कई तरह के भ्रष्टाचार को रोकने में सहायक होंगे।

□ पंक्ति बनाकर बस में चढ़ने में अव्यवस्था पैदा करने वाले लोग या तो जेबकतरे होते हैं या बाद में आने वाले। दोनों को ही अव्यवस्था पैदा करने से लाभ पहुँचता है। भीड़-भाड़ और धक्कमपेल में जेबकतरे के लिए किसी की जेब साफ करना सुविधाजनक होता है। इसी प्रकार जब कोई एक व्यक्ति पंक्ति के नियम को तोड़कर पहले चढ़ने का प्रयत्न करता है तो पंक्ति के नियम का पालन करने वाले लोग भी बजाय इसके कि उस एक व्यक्ति को रोकें, स्वयं भी पंक्ति तोड़कर पहले चढ़ने का प्रयत्न करने लगते हैं।

□ सच तो यह है कि नियम पालन करने वाले पर दोहरी जिम्मेदारी होती है—स्वयं नियम का पालन करने की और यथा-संभव, यथा-शक्ति नियम तोड़ने वालों का

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

 Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

प्रतिरोध करने की। नियम पालन करने वाले भले लोग जब तक संगठित नहीं होंगे, एक-दूसरे का समर्थन नहीं करेंगे, तब तक असभ्य और उच्छृङ्खल लोगों का सामना नहीं किया जा सकेगा। अनुचित कार्य करना ही बुरा नहीं है, सहना भी उतना ही बुरा है। एक सच्चे नागरिक का कर्तव्य है कि वह जहाँ कहीं भी अन्याय-अत्याचार को होता देखे, उसका विरोध और प्रतिरोध करे।

□ कई लोग दो आदमियों की सीट पर अकेले इस तरह बैठ जाते हैं कि दूसरे आदमी को बैठने की जगह नहीं रहती, यह असभ्यता है।

□ पायदान पर खड़े होकर यात्रा मत कीजिए। इससे तीन हानियाँ हैं—एक तो यह कि पायदान की जगह घिर जाने से चढ़ने-उतरने वालों को कठिनाई होती है; दूसरे, कानून की दृष्टि में भी यह अपराध है; तीसरे, गिरने का खतरा बना रहता है।

□ हम सब प्रतिदिन देखते हैं कि चलती बस पर दौड़-कर चढ़ने का प्रयत्न करने वाले, पायदान के हत्थे से लटकने वाले, चलती बस से उतरने वाले प्रायः गिर पड़ते हैं; किसी का सिर फूटता है, किसी के घुटने छिल जाते हैं, किसी का दाँत टूट जाता है तो कोई हत्थे को पकड़े हुए पैर पायदान पर न टिका सकने के कारण झूलता और घिसटता हुआ गिर पड़ता है, लहू-लुहान हो जाता है। फिर भी हम इन दुर्घटनाओं को देखकर कोई शिक्षा नहीं लेते और स्वयं भी वैसा आचरण कर बैठते हैं। यह कितने खेद की बात है! क्या आप समझते हैं कि शिक्षा लेने की चीज़ नहीं, देने मात्र की चीज़ है? □

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

व्यवहार-कुशलता

साधारण योग्यता को बुद्धिपूर्वक काम में लाने से ही प्रशंसा प्राप्त होती है।

हम अपने चारों ओर देखते हैं कि निरी बुद्धि से जीवन में सफलता प्राप्त नहीं होती। हाँ, यदि बुद्धि के साथ चतुराई भी हो तो दसगुणा अधिक सफलता मिल सकती है।

बुद्धि 'कुछ' है तो चतुराई 'सब कुछ' है। वह हमारी समस्त ज्ञानेन्द्रियों की शक्ति को बढ़ा देती है।

बुद्धि सब समस्याओं का समाधान है। वह सब कठिनाइयों पर विजय पाती है। वह सब विपत्तियों को दूर भगा देती है। इस चातुरी के अभाव में बड़े-बड़े बुद्धिमान् और प्रतिभाशाली व्यक्ति भी असफल होते देखे जाते हैं और उनसे गए-बीते किन्तु चतुर व्यक्ति मौज उड़ाते हैं।

विवेकशील व्यक्ति उतावलेपन में कोई काम नहीं करते। उनका अपनी वाणी पर असाधारण अधिकार होता है। वे हड़बड़ी में कोई काम करने के बाद पछताते नहीं

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

लगते कि उस समय बिना सोचे-समझे यह काम मैंने कर डाला। वे आवेश में आपे से बाहर नहीं होते।

वे सोच-समझकर मित्र बनाते हैं, पर शत्रु किसी को नहीं बनाते। उनके विरोधी भी उनकी चातुरी के प्रशंसक होते हैं।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

समय की पाबन्दी

यदि तुम्हें अपने जीवन से प्रेम है तो समय को व्यर्थ नष्ट मत करो, क्योंकि जीवन 'समय' से ही बना है।

समय को नष्ट होने से बचाने का सबसे अच्छा उपाय यह है कि अपनी समय-सारणी बना ली जाए।

□ □ □

आप किसी से मिलने का समय निश्चित करें तो ठीक समय पर पहुँच जाएँ। इस तरह आप अपना और दूसरों का समय नष्ट होने से बचा लेंगे।

ध्यान रखिए कि यदि आप किसी काम के लिए समय निश्चित करके, उस व्यक्ति के पास उस समय पर नहीं पहुँचते हैं तो वह व्यक्ति या तो कुछ देर बाद किसी दूसरे काम में लग जाएगा या कहीं चला जाएगा। यदि ऐसा नहीं हुआ और वह व्यक्ति देर तक आपकी प्रतीक्षा में बैठा अपना समय नष्ट करता रहा तो निश्चित समझिए कि वह व्यक्ति आपकी लापरवाही पर खीझ रहा होगा; आपके बारे में अपनी धारणा बदल चुका होगा।

हर बार देर से पहुँचना और हर बार देरी के लिए खेद प्रकट करना और क्षमा माँगना कोई अच्छी बात नहीं है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

किसी ने कहा है :

"दौड़ना बेकार है। मुख्य बात तो घर से समय पर चलना है।"

□

समय-सारणी बनाते समय इस बात का ध्यान रखें कि उसमें मनोरंजन और विश्राम के लिए भी उचित समय निर्धारित किया जाए।

□

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

धन्यवाद

जब भी कोई व्यक्ति आपकी सहायता करे, आपके दु:ख-कष्ट में सहभागी बने, आप पर कोई उपकार करे, फिर वह उपकार या काम चाहे कितना ही छोटा क्यों न हो, उसका धन्यवाद अवश्य कीजिए।

'धन्यवाद' कहने में कुछ खर्च नहीं होता।

यही नहीं, कोई भी व्यक्ति जब आपका कोई भी काम करे, चाहे इसके लिए उसे पारिश्रमिक दिया गया हो, फिर भी उसका धन्यवाद कीजिए।

□

होटल या रेस्तराँ में आप जो कुछ खाते-पीते हैं, उसका बिल चुकाते हैं, किन्तु बैरे को टिप फिर भी देते हैं। क्यों भला? फिर क्या कारण कि एक मजदूर से बोझ उठवाने के बाद आप उसका धन्यवाद न करें?

□

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

मित्रता

अच्छे मित्र को ढाल की तरह होना चाहिए जो दुःख में तो आगे रहे किन्तु सुख में पीछे।

□

जो मित्र, मित्र के दुःख से दुःखी नहीं होता वह सच्चा मित्र नहीं है।

□

मित्रता कसौटी है कि मित्र आपत्काल में सहायक होता है।

□

सच्ची मित्रता में दोनों मित्रों का उत्कर्ष होता है। वे एक-दूसरे के दोषों को दूर करने में सहायक होते हैं।

□

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

मुस्कान सुख की खान

आपके घर कोई आए और आप उनके स्वागत-सत्कार के लिए चाहे गलीचे न बिछा सकें, किन्तु आप अपनी मधुर मुस्कान से तो उनका स्वागत कर ही सकते हैं।

□

रोनी-सी सूरत बनाकर मत रहिए। हँसमुख बनिए।

□

संसार में दुःख की कमी नहीं है। आप अपने दुःख-कष्ट को बखानकर दुःख का प्रसार मत कीजिए। सदा प्रसन्न रहिए। अपनी प्रसन्नता से औरों को भी प्रसन्न कीजिए।

□

स्वयं उत्साही, प्रसन्न और आत्मविश्वासी बनिए। अपना व्यक्तित्व ऐसा बनाइए कि दूसरे भी आपसे प्रेरणा ले सकें। आपसे मिलते, बात करते ही दूसरों की उदासी दूर भाग जाए।

▭

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

वाणी

वाणी से मनुष्य के चरित्र का पता चल जाता है। यदि कोई मूर्ख बढ़िया-बढ़िया कपड़े पहनकर चुपचाप बैठा रहे तो किसी को पता नहीं चलेगा कि वह मूर्ख है।

उच्चारण स्पष्ट होना चाहिए और स्वर इतना ही ऊँचा कि सुनने वाले ठीक से सुन सकें। यदि आपकी बात में सत्य और तथ्य नहीं है तो ऊँचा बोलकर आप दूसरों को प्रभावित नहीं कर सकते।

सच बोलिए और उसे ऐसे ढंग से बोलिए कि दूसरों को अच्छा लगे। सत्य को कड़वा बनाकर मत बोलिए।

अपनी अशिष्टता और उद्दण्डता को स्पष्टवादिता कहकर स्पष्टवक्ता बनने का प्रयत्न मत कीजिए।

यदि आप मीठी या कड़वी बातों को खरा-खरा सुनाने पर तुले हुए हैं तो ठीक है। फिर आप जीवन में अत्यन्त साधारण-से व्यक्ति बनकर रह जाएँगे। कोई बड़ा काम करना, बड़ा उत्तरदायित्व संभालना आपके बलबूते का नहीं है।

मितभाषी बनिए अर्थात् मतलब की बात कीजिए। व्यर्थ बकवाद मनुष्य को हास्यास्पद बना देता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

आप जानते हैं कि भगवान् ने प्रत्येक मनुष्य को कान दो और जीभ एक दी है। इससे हमें चाहिए कि बोलें कम और सुनें अधिक।

गाली बकना, भद्दे मजाक करना, अपमानजनक शब्द कहना नीच, तुच्छ और छिछोरे लोगों का काम है।

लोक में यह कहावत प्रचलित है कि तलवार का घाव भर जाता है किन्तु वाणी का घाव कभी नहीं भरता।

जो लोग समय-कुसमय कुछ-न-कुछ बोलते ही रहते हैं, वे प्रायः दूसरों की अनावश्यक चर्चा—निन्दा, चुगली आदि करते रहते हैं। उनकी बातों में सार नहीं होता। लोग भी जानते हैं कि उनकी जीभ तो हर समय कैंची की तरह चलती ही रहती है। इसलिए वे उनकी बातों पर कभी भी ध्यान नहीं देते। कबीर ने कहा है—

ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोय।
अपना तन सीतल करे, औरन को सुख होय॥

अर्थात् हमें घमण्ड छोड़कर ऐसी बोली बोलनी चाहिए जो स्वयं को अच्छी लगे तथा सुनने वालों को भी सुख दे, उन्हें मधुर लगे।

अतः हमें सदा मधुर व हितकारी वाणी बोलनी चाहिए।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

व्यक्तित्व

ढंग के कपड़े अर्थात् साफ और ठीक सिले हुए, सुरुचि-पूर्ण रंग और काट, हँसमुख—आशा और विश्वास से पूर्ण प्रसन्न चेहरा, इसके अतिरिक्त भी प्रभावशाली व्यक्तित्व में कुछ ऐसी चीज होती है जो शब्दों द्वारा बताई नहीं जा सकती।

फिर भी वेश-भूषा का भी अपना महत्त्व है। आजकल वेश-भूषा के मामलों में बहुत गड़बड़ है। कहते हैं कि यह युग विज्ञान का युग है। किन्तु आधुनिक लोगों की वेशभूषा को देखकर तो कहना पड़ेगा कि इस विज्ञान-युग ने अभी तक लोगों को कपड़े पहनना भी नहीं सिखाया।

कपड़े ऋतु के अनुकुल, शरीर के अनुकूल और आयु के उपयुक्त होने चाहिएँ। कहावत है, "खाओ मन-भाता और पहनो जग-भाता।" पर हमारे कपड़ों का अच्छा या बुरा प्रभाव दूसरों की अपेक्षा हम पर अधिक पड़ता है। कपड़े हमारी नैतिक उन्नति और चरित्र को भी प्रभावित करते हैं। साफ-सुथरे और सलीके से पहने हुए कपड़े पहनने वाले के आत्मविश्वास को बढ़ाते हैं।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

पर कुछ लोग समझते हैं कि कपड़े अपनी अमीरी का प्रदर्शन करने का साधन हैं। यह ओछापन तो है ही, इस होड़ में शायद जीतना भी कठिन है।

प्राय: देखा गया है जिन लोगों में आत्मविश्वास की या व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाने वाले गुणों की कमी होती है, वे भड़कीले और विचित्र कपड़े पहनकर लोगों का ध्यान अपनी ओर खींचना चाहते हैं। ये लोग झबरे कुत्ते जैसे लम्बे-लम्बे बाल रखेंगे और स्त्रियों जैसे छींट के कपड़े पहनेंगे। अब तो युवक जरी-गोटे वाले कपड़े भी पहनने लगे हैं। बस, कसर चूड़ियाँ पहनने की है। नाखून तो युवक भी रंगने लगे हैं, होंठ रंग लें तो दोनों में भेद कर पाना कठिन हो जाएगा।

पुरुषों की वेश-भूषा में पौरुष की झलक मिलनी ही चाहिए। इसी प्रकार युवतियों की वेश-भूषा महिलोचित होनी ही चाहिए।

आजकल युवक-युवतियाँ ऐसे तंग कपड़े पहन रहे हैं, जिनके कारण झुकना, धरती पर बैठना, सीढ़ियों पर चढ़ना अत्यन्त असुविधाजनक हो गया है।

जो बहुत धनवान् हैं, जिनके घरों में बैठने के लिए कुर्सियाँ और सोफे हैं, भोजन भी डायनिंग टेबल पर बैठकर किया जाता है, जिन्हें कि घर और बाहर कुछ काम-काज नहीं करना पड़ता, सभी काम नौकर-चाकर करते हैं उनकी बातें छोड़ दीजिए, पर जिन्हें ये सब सुविधाएँ उपलब्ध नहीं हैं, वे उनकी भोंडी नकल क्यों करें?

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

स्वास्थ्य की दृष्टि से भी शरीर के साथ चिपके हुए कपड़े पहनना हानिकारक है, असुविधाजनक तो है ही। फिर भी बिना सोचे-समझे, सभी युवक-युवतियाँ लकीर की फकीर बन रही हैं। फैशन का एक झोंका आता है और तिनकों की तरह सभी उसमें उड़ने लगते हैं।

बड़ा आश्चर्य होता है यह देखकर कि जिन लड़कियों को अपने बढ़े हुए गन्दे नाखूनों को काटने की समझ नहीं है, वे भी नाखून रंगना तो जानती ही हैं।

माता-पिता की कमाई पर, अपने ही नगर में हिप्पियों जैसे किन्तु महँगे कपड़े पहनकर घूमना, नशीले पदार्थों का सेवन करना और स्वच्छन्द जीवन का स्वाँग रचना आसान है, किन्तु कहीं विदेश में जाकर अपना सामान पीठ पर उठाए, अभिभावकों से रुपए लिए बिना, नंगे पाँव, फटेहाल, मान-अपमान की चिन्ता किए बिना स्वच्छन्द जीवन बिताना बिल्कुल दूसरी बात है।

उधार ली हुई मान्यताएँ कभी भी जीवन का अंग नहीं बन पातीं।

वेश-भूषा चाहे एकदम बाहरी वस्तु है, फिर भी हमारा ध्यान सर्वप्रथम व्यक्ति की वेश-भूषा की ओर जाता है और हम उस व्यक्ति के सम्बन्ध में एक धारणा बनाते हैं। फैंसी ड्रेस जैसी वेश-भूषा किसी विज्ञापन के लिए, किसी प्रदर्शनी के लिए, किसी मनोरंजन-कार्यक्रम के लिए भले ही उपयुक्त हो, साधारणतया हास्यास्पद लगेगी। हाँ, यदि

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

कोई हास्यास्पद बनने में ही गौरव अनुभव करे तो उसके बारे में हमें कुछ नहीं कहना है।

कुछ लोग बदनाम होकर भी नाम कमाना चाहें तो यह उनकी अपनी मर्जी।

□ □ □

हमारा चेहरा, विशेष रूप से हमारी आँखें हमारे चरित्र को व्यक्त करने का सबसे सशक्त माध्यम हैं। एक अनुभवी आदमी आँखों में ईमानदारी या धोखाधड़ी, बुद्धि की चमक या मूर्खता की छाप, साहस या कायरता को भाँप लेता है। आत्म-विश्वास-रहित लोग आँख से आँख मिलाकर बात नहीं कर पाते। निर्मल और सतेज आँखें मनुष्य के योग्य होने का विश्वास दिलाती हैं। वे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य का दर्पण होती हैं।

कहते हैं कि आँखों को झूठ बोलना कोई नहीं सिखा सकता।

□ □ □

बातचीत भी व्यक्तित्व की एक कसौटी है। औपचारिक ढंग की बातचीत में तो व्यक्तित्व का उतना उद्घाटन नहीं होता, किन्तु अनौपचारिक ढंग की बातचीत में व्यक्तित्व का उद्घाटन हो जाता है।

"आपकी बातचीत ही आपकी सच्ची तस्वीर है।"

□

'सरलता' व्यक्तित्व का एक अन्य महत्त्वपूर्ण घटक

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

है। 'कुटिलता' राजनीतिज्ञों के लिए भले ही गुण हो, पर अन्यत्र तो वह दोष ही है। सरल स्वभाव के व्यक्ति अपने निश्छल अन्तःकरण के कारण दूसरों के विश्वासपात्र बन जाते हैं। वे छल-कपट से सदा दूर रहते हैं। मधुर व्यवहार और सौम्य व्यक्तित्व वाला व्यक्ति अपने गुणों से अपने मार्ग को निष्कंटक बना लेता है। यही कारण है कि वह दूसरों की अपेक्षा शीघ्र उन्नति करता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

लोकप्रियता

कोई व्यक्ति यों ही बिना गुणों के लोकप्रिय नहीं बन जाता। लोकप्रिय बनने के लिए उदार, कृपालु और सेवा-भावी होना अत्यन्त आवश्यक है। निःस्वार्थ व्यक्ति ही लोकप्रिय बन सकता है। पर कोई व्यक्ति लोकप्रिय बनने के लिए इन गुणों को नहीं अपनाता। ये गुण उसमें होते हैं, इसलिए लोकप्रिय बनता है। निःस्वार्थ सेवा, उदारता और पर-दुःख-कातरता उसका स्वभाव होता है।

आप अपने निःस्वार्थ होने का स्वाँग रचकर अधिक दिनों तक लोगों को धोखे में नहीं रख सकते। जो लोग पाना तो सब-कुछ चाहते हैं पर देना कुछ नहीं चाहते, जो केवल अपनी चिन्ता में मग्न रहते हैं, दूसरों से तनिक भी सहानुभूति नहीं रखते, वे एक दिन मित्रों, बन्धु-बान्धवों और पड़ोसियों द्वारा उपेक्षित हो जाते हैं। स्वार्थ-भावना का सबसे बड़ा दोष यह है कि अपनी ही सिद्धि में बाधक होती है। निःस्वार्थी व्यक्ति के अनेक सहयोगी और मित्र बन जाते हैं जब कि स्वार्थी को उसके मित्र भी छोड़ जाते हैं।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

गांधी, सुभाष, नेहरू आदि नेता अपनी निःस्वार्थ सेवा-भावना के कारण लोकप्रिय हुए। उन्होंने राष्ट्र की सेवा की, दीन-दुःखियों के दुःख-दर्द को सुना तथा उसे दूर करने का भरकस प्रयत्न किया। उनकी निःस्वार्थ सेवा-भावना ने उन्हें लोकप्रिय बना दिया। उन्होंने जनता के हृदय में अच्छा स्थान प्राप्त किया।

☐

सेवा से ही मेवा (मीठा सुख) मिलता है।

☐

सेवा को हमारे शास्त्रों में सबसे ऊँची उपासना माना गया है। यह ऐसी सिद्धि है जिसे योगी लोग भी पाने को तरसते रहते हैं, हालांकि यह इतनी आसान है कि हर कोई पा सकता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

छोटी-छोटी बातें

यदि आप यह समझते हैं कि छोटी चीजों, छोटी बातों या छोटे कामों की उपेक्षा करने में कोई हानि नहीं है तो आप भूल कर रहे हैं।

अनुभव ने यह प्रमाणित कर दिया है कि छोटी बातों से ही बड़ी बातों का पता चलता है। यह मान लेना उचित ही है कि जो व्यक्ति छोटी-छोटी बातों की भी उपेक्षा नहीं करता, वह बड़ी बातों की तो कभी उपेक्षा करेगा ही नहीं।

इसके विपरीत हम यह कह सकते हैं कि जो आदमी छोटे काम नहीं कर सकता, वह बड़े काम क्या करेगा ?

एक आदमी इंटरव्यू देने कम्पनी के डायरेक्टर के पास गया। उसमें अपेक्षित सारी योग्यताएँ थीं। देखने में चुस्त-दुरुस्त था, किन्तु उसके बढ़े हुए गन्दे नाखूनों को देखकर डायरेक्टर ने उसे नौकरी देने से इन्कार कर दिया।

पाले की कुछ बूंदें बड़े-बड़े वृक्षों के नवजात अंकुरों पर पड़कर उन्हें सदा के लिए बौना बना देती हैं।

नदी के उद्गम-स्थान के पास धारा में पड़ा एक छोटा पत्थर भी उसके प्रवाह को बदल देता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

हमारी छोटी-सी भूल के कारण कई बार कोई महत्त्व-पूर्ण अवसर हाथ से निकल जाता है और हम जीवन की दौड़ में दूसरों से पिछड़ जाते हैं।

जो लोग पैसों को बचा लेते हैं, उनके पास रुपए इकट्ठे हो जाते हैं।

जीवन में बड़ी-बड़ी घटनाएँ बहुत कम घटती हैं। किन्तु छोटी-छोटी बातें, काम और घटनाएँ तो सभी के जीवन में नित्यप्रति घटती रहती हैं। इसलिए उन्हें छोटा समझकर उनकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

उतावला सो बावला

जब हम हबड़ा-तबड़ी में होते हैं तो हमारा मस्तिष्क ठीक से काम नहीं कर पाता। यही कारण है कि उतावली में किए हुए काम ठीक नहीं होते और उनके विपरीत परिणाम देखकर हमें पीछे पछताना पड़ता है।

संकट का काल आपकी परीक्षा का काल है। आपमें कितना धैर्य है इसकी परीक्षा का काल है।

□

धीरज, धर्म, मित्र अरु नारी।
आपत्काल परखिए चारी॥

□

जो धीर और वीर पुरुष होते हैं, वे आपत्काल में घबराते नहीं, अपने होश-हवाश खोते नहीं और ये ही वे लोग हैं जो बड़े-बड़े संकटों पर विजय पा लेते हैं।

इन लोगों की दूसरी विशेषता यह है कि ये लोग उन्नति में, धन और पद पाकर भी आपे से बाहर नहीं होते, अभिमान नहीं करते।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

श्री रामचन्द्रजी को जब राज्याभिषेक करने का समाचार सुनाया गया तो वे हर्ष से फूलकर कुप्पा नहीं हो गये थे और जब उन्हें वनवास की आज्ञा मिली तो उदास नहीं हुए। उनकी मुखाकृति में दोनों स्थितियों में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। जो महान् होते हैं वे सम्पत्ति और विपत्ति में सदा एक-से रहते हैं।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

जिज्ञासा

जिज्ञासा का अर्थ है जानने की इच्छा। जिज्ञासा ज्ञान-प्राप्ति का सर्वोत्तम साधन है। जिसमें जिज्ञासा नहीं, वह ज्ञान कैसे प्राप्त करेगा ? कुछ लोग समझते हैं कि ज्ञान-प्राप्ति का समय तो छात्रावस्था ही है। यह उनकी भूल है। ज्ञानराशि इतनी विस्तीर्ण है कि आयुपर्यन्त सीखते रहने पर भी ज्ञानसागर की एक बूंद ही पल्ले पड़ेगी।

यह ठीक है कि हम सभी चीजों को नहीं जान सकते, किन्तु जीवन के लिए जितना ज्ञान आवश्यक है, उतना-भर तो सभी को प्राप्त करना ही चाहिए।

ज्ञान प्रकाश है और अज्ञान अंधकार। कौन भला आदमी अज्ञान के अंधेरे में रहना चाहेगा ? जैसे ताजी हवा और प्रकाश के लिए हम घर की खिड़कियाँ खुली रखते हैं, वैसे ही ज्ञान-रूपी प्रकाश के लिए भी हमें अपने मस्तिष्क की खिड़कियाँ खुली रखनी चाहिएँ।

भगवान् कृष्ण ने गीता में कहा है कि ज्ञान जैसी पवित्र वस्तु इस संसार में दूसरी नहीं है।

ज्ञान प्राप्त करने के दो उपाय हैं। पहला, मानवजाति का समस्त ज्ञान पुस्तकों में संचित है और उसका अध्ययन-मनन करके हम उसे अपना बना सकते हैं।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

 Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

दूसरा उपाय है कि जो ज्ञानी हैं, उनसे हम ज्ञान को सीखें। गीता में भगवान् कृष्ण ने कहा है कि जो ज्ञानी हैं, वे विनयी, जिज्ञासु और सेवक को उस ज्ञान का उपदेश देते हैं।

यद्यपि शिक्षा का एक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य यह है कि हम अध्ययन द्वारा ज्ञान प्राप्त करने में समर्थ हो सकें, फिर भी बहुत सारी बातें ऐसी होती हैं जिन्हें केवल पुस्तक में पढ़कर नहीं सीखा जा सकता। उसके लिए ज्ञानवान् लोगों से सहायता लेना आवश्यक है, जैसे हम शिक्षाकाल में पुस्तकों और अध्यापकों से सहायता लेते हैं। जैसे विज्ञान के सिद्धान्त और व्यवहार दो पक्ष हैं और व्यवहार-पक्ष का ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रयोगशाला में क्रियात्मक ढंग से ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक है, उसी प्रकार जो ज्ञानी हैं—जिनके ज्ञान और व्यवहार में समानता है, उनसे हमें ज्ञान प्राप्त करना चाहिए।

बालकों और किशोरों में जिज्ञासा स्वाभाविक रूप से होती है। यह बात पूर्णरूप से सच है कि विज्ञान के अनेक आविष्कारों की जननी यह जिज्ञासा ही है।

आप जानते ही हैं कि बालक ज्योंही बोलने लगता है, वह अपने माता-पिता से प्रश्नों की झड़ी लगा देता है। "क्या, क्यों, कैसे" को दोहराता वह थकता नहीं और माता-पिता उसके प्रश्नों के उत्तर देते-देते खीझने लगते हैं। यह अनुचित है।

ज्ञान प्राप्त करना और ज्ञान का प्रसार करना अत्युत्तम जीवन-लक्ष्य है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

दृढ़ निश्चय

आप जीवन में कुछ बनना चाहते हैं, कुछ कर दिखाना चाहते हैं, किन्तु आप जानते हैं कि आजकल काम अलादीन के चिराग से नहीं होते, परिश्रम करने से होते हैं।

अनेक बाधाएँ आती हैं और काम रुक जाता है। कभी साधनों का अभाव, कभी सहयोगियों का बिछुड़ जाना तो कभी और कुछ।

भला ऐसा कौन मूर्ख होगा जो विद्वान्, धनवान् और सामर्थ्यवान् न बनना चाहता हो! पर सभी तो नहीं बनते।

होता यह है कि कुछ लोग रुकावटों के भय से सोचे हुए काम को आरम्भ ही नहीं करते। कुछ लोग प्रारम्भ तो कर देते हैं पर ज्योंही कठिनाई आती है, छोड़ बैठते हैं। वे थोड़े ही होते हैं जो विघ्नों से टक्कर लेते हैं और उन्हें दूर करके कार्य को पूरा करते हैं। यही लोग हैं जो अपने स्वप्नों को साकार करते हैं। उनका निश्चय अटल होता है। उनकी संकल्प-शक्ति अजेय होती है।

लोग कहते हैं अमुक आदमी मिट्टी को हाथ डालता है तो वह सोना बन जाती है। मिट्टी सोना बनती सबको

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

 Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

दिखाई देती है, परन्तु उस व्यक्ति के निश्चय की दृढ़ता को कौन देख पाता है !

ये लोग 'करो या मरो' की भावना से काम करते हैं। गजब का जीवट होता है इन लोगों में। ये ही लोग हैं जो अपने परिश्रम और दृढ़ निश्चय से भिखारी से धनवान् बन जाते हैं। ये दुर्गम पर्वतों की अजेय चोटियों के सिर पर अपने पाँव रखते हैं। समुद्र की अतल गहराइयों को छूकर आते हैं, चन्द्रमा के धरातल पर अपने पद-चिह्न छोड़कर आते हैं।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

आज

जिस काम को आज करना है, उसे आज ही करके छोड़िए। कल पर मत रहने दीजिए। आज के काम को कल पर टालने की आदत के कारण हमारे कितने ही उत्तम विचार और कितने ही उत्तम संकल्प यों ही नष्ट-भ्रष्ट हो जाते हैं।

□□

इस पत्र का उत्तर कल दे लेंगे अथवा इस काम को कल कर लेंगे, यह सोचकर जिन कामों को हम टालते हैं, वे काम सदा अधूरे और बिना किए रह जाते हैं।

□□

सच तो यह है कि जब हम किसी काम को कल के लिए टाल देते हैं तो समय उस काम की उपयोगिता को ही समाप्त कर देता है।

▭

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

'नहीं' का महत्त्व

कुछ लोग लोकप्रिय बनने के चक्कर में उन्हें जो भी काम बताया जाय, झट 'हाँ' कर देते हैं।

काम बताने वाला व्यक्ति 'हाँ' सुनकर उस समय तो प्रसन्न हो ही जाता है, पर बाद में 'हाँ' कहने वाला जब उस काम को नहीं कर पाता है तो जगह-जगह उसीकी निन्दा करने लगता है।

'लोकप्रिय' बनने के चक्कर में लोकनिन्दा का पात्र बनना पड़ता है।

कहावत है : एक 'हाँ' एक दुःख।
एक 'न' सौ सुख।

किसी को किसी काम के लिए 'हाँ' कह देने और उस 'हाँ' को पूरा करने का अर्थ है, उस काम को करने के लिए पूरा-पूरा प्रयत्न करना। इसके लिए आपको शारीरिक, मानसिक और आर्थिक प्रयत्न करना पड़ सकता है और संभव है कि आपकी परिस्थिति यह सब-कुछ करने की आज्ञा न देती हो। अब यदि आप अपने वचन से पीछे हटते हैं तो वचन भंग होता है और यदि वचन पूरा करने का प्रयत्न करते हैं तो सौ कठिनाइयाँ झेलनी पड़ती हैं।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

इसलिए किसी को किसी काम के लिए 'हाँ' कहते समय अच्छी तरह सोच-विचार लीजिए कि वह काम आपकी सामर्थ्य के भीतर है या नहीं ? काम कर देने पर आपको पीछे पछताना तो नहीं पड़ेगा कि 'हाँ' कहकर आपने मुसीबत मोल ले ली।

किन्तु इसका यह अर्थ भी नहीं है कि कोई किसीका काम करे ही नहीं। मनुष्य ही मनुष्य के काम आता है। जो काम आपके बलबूते का है, उसे अवश्य कीजिए। किन्तु बिना सोचे-समझे हर काम के लिए 'हाँ' कह देंगे तो कठिनाई में पड़ जाएँगे और झूठे भी बनेंगे।

कुछ लोग मित्रों में डींग हाँकते रहते हैं कि मैं यह कर सकता हूँ, वह कर सकता हूँ; मेरा उस आदमी से परिचय है और मैंने उस मित्र का वह काम दो मिनटों में कर दिया था।

इस तरह की बातें कहकर वे अपना बड़प्पन प्रकट करना चाहते हैं। किन्तु, जब उन्हें कोई काम बता दिया जाता है तो ढोल की पोल का पता लग जाता है।

इसलिए यह आवश्यक है कि जिस काम को आप नहीं कर सकते, उसके लिए नम्रता के साथ मना कर दीजिए। 'नहीं' कह दीजिए। इससे आप न तो झूठे बनेंगे और न उलझन में पड़ेंगे।

'नहीं' जो कि दो अक्षरों का छोटा-सा शब्द है, इस दृष्टि से बड़ा ही महत्त्वपूर्ण है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

आत्म-निरीक्षण

'आत्म-निरीक्षण का अर्थ है—अपने-आपको देखना, अर्थात् यह देखते रहना कि मेरा आचरण, मेरा व्यवहार, मेरा कार्य ठीक हो रहा है या नहीं। इसका यह अर्थ भी है कि आप अपनी भूल और त्रुटियों को देखें और उनसे यह सीखें कि भविष्य में त्रुटियाँ और भूलें न हों।

अपने किसी आचरण के कारण आपको किसीसे अपमानजनक शब्द सुनने पड़ें तो भविष्य में आप वैसा आचरण न करें जिससे दोबारा आपका अपमान हो।

यदि आप अपने मित्रों के साथ अभद्र व्यवहार करते हैं तो वे शीघ्र ही आपकी मित्रता छोड़ देते हैं। इन बातों पर यदि आप ध्यान देंगे तो भविष्य में मित्रों के साथ वैसा व्यवहार न करेंगे।

आज आपने सारा दिन व्यर्थ ही खो दिया। यदि आप आत्म-निरीक्षण करेंगे तो भविष्य में आज की तरह आपका समय नष्ट नहीं होगा।

पिछली वार्षिक परीक्षा में आपको बड़े अंक मिले थे और अपनी कक्षा में दूसरा स्थान मिला था। इस बार आप पास तो हो गये किन्तु थोड़े अंक मिले। आत्म-

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

निरीक्षण करेंगे तो इसका कारण मालूम हो जाएगा और भविष्य में आप अपने में सुधार करके अपना परीक्षा-परिणाम सुधार सकेंगे। जो आत्म-निरीक्षण नहीं करता वह अन्धेरे में भटकता है। वह अपने-आपको धोखा देता है। उसे न तो अपनी त्रुटियों का पता है न गुणों का।

जो आत्म-निरीक्षण करता है, वह अपनी त्रुटियों को जानता है और प्रकाश में यात्रा कर रहा है। वह सावधान है। वह निरन्तर उन्नति करता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

5/-

सुबोध पब्लिकेशन्स

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida